आचार्य तुलसी का 96वां जन्मोत्सव आयोजित

नैतिकता विहिन धर्म मुझे स्वीकार नहीं : आचार्य महाप्रज्ञ

29वर्ष पूर्व हुआ था विलक्षण दीक्षा समण श्रेणी का उद्‌भव

लाडनूं 20 अक्टूबर, 2009।

अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा सम्पूर्ण देश में नैतिकता एवं मानवीय एकता का अद्‌भूत माहौल बनाने वाले आचार्य तुलसी के 96वें जन्मोत्सव के अवसर पर विशाल जनमेदनी को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि धर्म का मूल नैतिकता, प्रामाणिकता है। जिसकी पृष्ठभूमि में इनका अभाव है तो मैं उस धर्म को मानने के लिए तैयार नहीं हूं। आचार्य तुलसी के अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा नैतिकता एवं मानवीय एकता के सन्दर्भ में विलक्षण कार्य किया। आज के देख सकते हैं कि 20वीं सदी में मानवीय एकता का कार्य करने वालों में आचार्य तुलसी का प्रथम पंक्ति में नाम आता है। उन्होंने आचार्य तुलसी को मानव धर्म का प्रवक्ता बताया।

आचार्यवर ने आचार्य तुलसी की कल्पना के फूल जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में आयोजित इस कार्यक्रम में अणुव्रत के निर्देशक तत्त्वों की व्याख्या कराते हुए कहा कि व्यक्तिगत संग्रह और व्यक्तिगत उपभोग की सीमा होती तो अमेरिका में आर्थिक मंदी नहीं आती। इस वैश्विक आर्थिक मंदी का समाधान व्यक्तिगत संग्रह को सीमा एवं व्यक्तिगत उपभोग की सीमा करने से संभव होता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि वर्तमान में धर्म ग्रन्थों और पंथों में सीमित हो गया है। जो धर्म बाजार में, जीवन व्यवहार में न आये वह धर्मकि काम का हो सकता है। आचार्यश्री ने अपनी पुस्तक तुलसी विचार दर्शन एवं भिक्षु विचार दर्शन का उल्लेख करते हुए कहा कि साधन शुद्धि पर सर्वप्रथम विचार करने वाले महापुरुष आचार्य भिक्षु हैं और उसके बाद महात्मा गांधी ने इस पर बहुत बल दिया है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी को युग प्रवर्तक आचार्य बताते हुए कहा कि आचार्य तलुसी ने अणुव्रत रूपी जिस धर्म का प्रवर्तन किया है वह जाति विशेष के लिए नहीं सम्पूर्ण मानवता के लिए है। जब तक मानव जाति रहेगी तब तक अणुव्रत का मूल्य रहेगा। राष्ट्रसंत ने कहा कि वर्तमान दुनिया में जितना भय का वातावरण है उतना कभी नहीं था। पुराने जमाने में भी युद्ध होता था, पर कुछ नियमों के साथ। निहत्थों को नहीं मारा जाता था। पर आज लगता है यह दुनिया निहत्थों को मारने वाली दुनिया हो गई है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि दुनिया में अनैतिकता, हिंसा आदि अपराध बढते हैं तो प्रकृत्ति अपने आप किसी न किसी महापुरुष को अवतरित कर देती है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा मानवीय एकता का कार्य किया। क्योंकि इंसान से प्यार करना सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। अगर मुझे कोई कहे कि भगवान की पूजा करोगे या इंसान से प्यार तो मैं भगवान की पूजा को छोड़ इंसान से प्यार करने को महत्त्व दूंगा।

क्योंकि प्राणीमात्र से प्यार करने में सबसे बड़ी अहिंसा है। उन्होंने आचार्य तुलसी को 20वीं सदी में होने वाले संता के आभूषण बताया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा ने कहा कि आचार्य तुलसी का जीवन बहुआयामी था। उनमें जितनी कठोरता थी उतनी ही कोमलता भी थी। उन्होंने जिस तरह का जीवन जीया,, जीवन में जो कुछ किया वह एक महान साधक ही कर सकता है। साध्वीप्रमुखाश्री ने आचार्य तुलसी की आत्मथा 'मेरा जीवन मेरा दर्शन' का उल्लेख करते हुए कहा कि आचार्य तलुसी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जानने के लिए उनकी आत्म कथा आयना बनकर प्रस्तुत है। उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित आचार्य तुलसी की आत्मकथा का 18,19 एवं 20वां भाग विमोचित हुआ। आत्मकथा के इन खण्डों को एन.जी. फाउण्डेशन के अध्यक्ष गोविन्दराम सरावगी ने आचार्य प्रवर को विमोचन हेतु समर्पित की।

मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभा ने कहा कि मेरू की ऊंचाई एवं सागर की गहराई नापना दुरूह है, वैसे ही आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को नापना भी दुरूह है। उन्होंने साधारण परिवेश में जन्म लेते हुए भी असाधारण कार्य किये।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति लोकेन्द्रसिंह शेखावत ने कहा कि आचार्य तुलसी का जीवन सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणादायि है। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के द्वारा अच्छे इंसान का कार्य किया। ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्यों के कारण ही उनके बताये रास्ते पर पूरी दुनिया चलने को तैयार है। उन्होंने आचार्य आचार्य महाप्रज्ञ को दुनिया का बहुत बड़ा दार्शनिक बताया। अजमेर दरगाह एवं दरबान अजुंमन कमेटी के अध्यक्ष गुलाबनबी कीबरिया ने आचार्य तुलसी के संदेश को अम्ल करने की जरूरत बताई एवं ऐसे भाईचारे का संदेश देने वाले कार्यक्रमों में बार-बार हाजिर हाने की इच्छा जाहिर की। डॉ. बनवारी लाल गौड़ ने आचार्य तुलसी को आयुर्वेदाचार्य बताते हुए कहा उनके साहित्य में जगह-जगह आयुर्वेद के सिद्धांत मिलते हैं। उन्होंने आचार्य तुलसी को ज्ञान का उर्जस्वी स्रोत बताया।

समण श्रेणी ने मनाया अपना 30वां जन्म दिन

आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ की दूरदृष्टिपूर्ण सोच का ही परिणाम है कि 29 वर्ष पूर्व एक विलक्षण दीक्षा के रूप में नई श्रेणी का शुभारंभ किया जो आज सम्पूर्ण विश्व में जैन धर्म एवं आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ के अवधानों को प्रसारित कर रही है। आचार्य तुलसी के जन्म दिवस पर ही इस श्रेणी ने अपना 30वां जन्म दिन मनाया। इस श्रेणी के समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा ने समण श्रेणी के विकास क्रम को अभिव्यक्त किया। समणी कुसुमप्रज्ञा, अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष कनक बरमेचा, साध्वी स्वस्तिकप्रभा, श्रीमती सरोज दूगड़ सुश्री नीलम खटेड़ अपने भावों

को प्रस्तुत किया। मुमुक्षु बहिनों एवं स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल ने गीत के द्वारा अपनी श्रद्धा समर्पित की। इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री शांतिलाल बरमेचा ने आए हुए मुख्य अतिथियों को साहित्य भेंट कर उनका सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

प्रभात फेरी का आयोजन

आचार्यतुलसी के 96वें जन्म दिवस के अवसर पर प्रातः काल प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जो ऋषभ द्वार से प्रारंभ होकर नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए जैन विश्व भारती पहुंचा। प्रभातफेरी में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ कन्या मण्डल और तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्त्ताओं ने उद्घोष, गीतिका व जयकारों के साथ आचार्यश्री तुलसी को याद किया।